आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा –एक तुलनात्मक अध्ययन

अवधेश कुमार मिश्र
व्याख्याता–साहित्य
राजकीय विटठ्लनाथ सदाशिव पाठक
आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, कोटा (राज.)

शोध सारांश :

बीसवीं शताब्दी संस्कृत साहित्य में नये उन्मेष की शताब्दी मानी गयी है। इस अवधि के काव्यकारों ने देश की परिवर्तित परिस्थितियों को समझकर समय और समाज को अपनी–अपनी रचनाओं में स्थान दिया। पारम्परिक विद्वानों ने परम्परा से हटकर नये युग और नयी विधाओं को चुनौती के भाव से स्वीकार किया तथा लेखन की नयी भूमि भी अन्वेषित की। दरबारी स्तुतियों का स्थान सतही सत्यता ने ले लिया। मेकाले की शिक्षा–नीतियों की विकृति तथा पाश्चात्य संस्कृति की नयी चेतना संस्कृतकाव्यों में परिलक्षित होने लगी। प्रजातन्त्र की नयी व्यवस्था, बदलते परिदृश्य, बदलती हुयी मानसिकता तथा विश्व की घटनाओं ने उन्हें प्रभावित और विचलित किया, परिणाम स्वरुप राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक संवेदना के प्रबल प्रवाह ने कवियों को भावों से भर दिया। उनकी सामाजिक चेतना प्रखर होती गयी, समय की अन्य विचारधाराओं का वैचारिक दर्शन, प्राचीन आख्यानों के माध्यम से होने लगा। विशालाकार महाकाव्यों के स्थान पर खण्डकाव्यों का प्रचलन बढ़ गया और आधुनिक काव्य परम्परा में खण्डकाव्यों की अग्रणी भूमिका स्वीकार की जाने लगी। आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा के ख्यातनाम कवियों ने विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है और अधुनातन भाव बोध को अपनी अभिव्यक्ति दी है।

कूट शब्द : ख्यातनाम, तुलनात्मक, विज्ञापन, विरहिणी, आजीविका।

आधुनिक खण्ड़काव्यकारों ने समसामयिक व्यवस्था को विलक्षण दृष्टि से देखा है तथा युग्–चेतना के समवाय को स्वकीय काव्य में समाहित किया है। इन परिवर्तनों से न केवल परम्परा को ही संवर्धित किया है, अपितु रसनीयता का परमोत्कर्ष स्थापित करते हुये अपने काव्यों को सहृदयास्वाद्य, कोविदास्वाद्य तथा लोकास्वाद्य भी बनाया है। भाव और शिल्प के क्षेत्र में आधुनिक विशेषणों को संयुक्त किया है। पूर्वाचार्यों कवि मनीषियों ने जिन्हें अनदेखा किया, उन भावों को भी आधुनिक परम्परा के कवियों ने अपने–अपने काव्य में संजोया है। उन्हीं कवियों और उनकी कृतियों का उल्लेख उनकी खण्डकाव्यकृतियाँ में समभाव स्थापना के निमित्त तुलनात्मक अध्ययन के लिये अपेक्षित है।

क्योंकि समकालीन एवं समभाव एवं समदृष्टि वाले कवियों एवं उनके कृतियों का प्रभाव किसी न किसी रुप में प्रतिबिम्बित होता अवश्य है। इनमें हुए समस्त परिवर्तन समाज व समय के परिवर्तन के कारण हुये है। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में सनातन संस्कृति की विकृति, गो–सेवा के स्थान पर श्वान–सेवा, स्वयं भवन में माता–पिता वृद्धाश्रम में, स्त्रियों का स्वछन्द रुप, विज्ञापन में नग्नता आदि भौतिक विकास की आड़ में प्रकृति का विनाश, संस्कृतज्ञों का उपहास, संस्कृति का ह्रास आदि तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब, साहित्य में अवश्य समाहित होता है।

एतदर्थ समानधर्मी कतिपय कवियों एवं उनकी कृतियों का निदर्शन तुलनात्मक अध्ययन के आलोक में प्रस्तुत है –

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री –

कवि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री को युग् प्रवर्तक साहित्यकार के रुप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। उन्होंने अपने काव्य में नई प्रवृत्तियों का आधान, नव विधा तथा नई शैली की अवतारणा की है। दोहा, सोरठा, घनाक्षरी, छप्पय कवित्त जैसे हिन्दी भाषा के छन्दों को संस्कृत काव्य में उतरा है। व्यंग्य, विडम्बना तथा सामाजिक वैषम्य की अभिव्यक्ति भी प्रभावशाली है।

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री मूलतः आंध्रपदेश के तलंग ब्राह्मण परिवार के अंश थे। इनका जन्म 1891 में हुआ, इनकी शिक्षा–दीक्षा और आजीविका का क्षेत्र जयपुर राज्याश्रित संस्कृत विद्यालय–महाविद्यालय रहा। 14 वर्ष की अवस्था से लेकर 74 वर्ष तक की अवधि में निरन्तर साहित्य साधना करते हुये संस्कृत जगत् को अमूल्य योगदान दिया। कवि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने गद्य और पद्य दोनों ही विधा में अपनी लेखनी चलायी है। ''आदर्शरमणी'' उपन्यास, प्रबन्धपारिजात ''विल्हणचरितम्'', ''भारतवैभवम्'', ''गीर्वाणगिरा गौरवम्'' इत्यादि गद्य रचना संस्कृत जगत् के मानस पटल पर समाद्रित है।

पद्य काव्यकृतियों में –

- खण्डकाव्य :
    1. मनोलहरी
    2. सुरभारती
    3. वियोगिनीविप्रलापः

- मुक्तककाव्य :
    1. जयपुरवैभवम्
    2. साहित्यवैभवम्
    3. गोविन्दवैभवम्

आदि छह काव्य शास्त्री जी के कवित्व को सिद्ध करता है। जिनका तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

- खण्डकाव्य –

1. मनोलहरी खण्डकाव्य – संस्कृत रत्नाकर नामक पत्रिका के तृतीय वर्ष की प्रथम संचिका, वैशाख संवत् 1991 में इस मनोलहरी के केवल 20 पद्य ही प्राप्त होते है। पद्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि, यह कवि की एक अपूर्ण रचना रही है।[1]

मनोलहरी में मन के विभिन्न पक्षों का सुन्दर चित्रण किया गया है। विषय वस्तु की गम्भीरता रस प्रवणता और गाम्भीर्य के कारण मनोलहरी को खण्डकाव्यों के रुप में स्वीकार किया जाता है।

2. सुरभारती खण्डकाव्य – ''सुरभारती'' से अर्थ है देववाणी, जो वाणी देवों की हो, वह मृत कैसे हो सकती है ? अतः इस कृति में संस्कृत भाषा की महिमा का बखान किया गया है। यह संस्कृत रत्नाकर पत्रिका के 8,9,10,11 अंक में प्रकाशित है।[2] 14 पद्यों के इस काव्य में संस्कृत की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। इस खण्डकाव्य को कवि ने अभिनन्दन सम्मेलन में पढ़ा था, सभापति ने प्रसन्न होकर स्वर्ण पदक दिया था।

3. वियोगिनीविप्रलापः खण्डकाव्य – संस्कृत साहित्य में विरह प्रसंग को लेकर अनेक काव्यों नाटकों आदि में रचना प्राचीन काल से ही होती रही है। इसी काव्य परम्परा के अनुसार भट्ट जी का खण्डकाव्य 'वियोगिनी विप्रलापः' भी विरह कथा पर आधारित है। इसका प्रकाशन मासिक पत्रिका संस्कृत रत्नाकर के द्वितीय वर्ष के तृतीय अंक में हुआ था। विरही नायक का जो चित्रण किया गया है, वह वास्तव में प्रशसनीय है। तथा विरहिणी के विरह दशा का वर्णन भी अत्यन्त मार्मिक है।

- मुक्तककाव्य –

1. जयपुर वैभवम् मुक्तककाव्य – जयपुर की सांस्कृतिक परम्पराओं का उल्लेख किया गया है। इस काव्य में संस्कृत के छन्दों के साथ–साथ हिन्दी और उर्दू के छन्दों का प्रयोग भी किया गया है। इसका प्रकाशन मंजु कविता निकुंज नामक जयपुर की पत्रिका में किया गया था।

2. साहित्यवैभवम् मुक्तककाव्य – नामक काव्य का प्रकाशन निर्णय सागर प्रेस मुम्बई से हुआ। इसमें नवीन शैली, एवं नवीन छन्दों का प्रयोग आदि काव्य कला का अद्भूत विलास दृष्ट्व्य है।
3. गोविन्दवैभवम् मुक्तककाव्य – इस काव्य का प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर से हुआ। इसमें भगवान गोविन्द देव के यश तथा उनकी भावपूर्ण स्तुति का अद्भुत वर्णन है।

श्री रसिकबिहारी जोशी –

कवि श्री रसिकबिहारी जोशी का जन्म 12.09.1927 को अजमेर जनपद के ब्यावर नामक गाँव में हुआ था। कवि के पिता श्री रामप्रताप जोशी नागपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागध्यक्ष रहे थे। कवि जोशी की प्राथमिक शिक्षा ब्यावर (अजमेर) में ही हुई। विलक्षण प्रतिभा के धनी श्री जोशी जोधपुर विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विषयक प्राध्यापक रहे। उन्होंने अवकाश ग्रहण करने के बाद में ब्यावर में निवास करते हुये, साहित्य साधना की। साहित्य साधना के साथ–साथ राधामाधव की उपासना और योगसाधना करते हुये ''मोहभंग'' नामक महाकाव्य तथा करुणा–कटाक्ष–लहरी, सारस्वतम्, श्रीगोवर्धनगौरवम् नामक तीन खण्डकाव्यों का प्रणयन किया। जो आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा को सम्बल देता है। शिवलिंगरहस्यम्, स्पर्शास्पर्शविवेकः भक्तिमीमांशा तथा उपदेशावली भी इनकी उल्लेखनीय विचार प्रधान रचना है।

1. करुणा–कटाक्ष–लहरी –

यह लहरी काव्य देवाराधन के लिये प्रसिद्ध है। इसमें भावों की गहनता है। कृपाकांक्षा का स्वर तथा अन्तर्जगत् से निःसृत व्यक्तिगत भावों की गीति है। इसमें माधूर्य भक्ति की प्रधानता है।

''स्तनं ते नयनं वदामि चतुरं राधे महालोलुपम्,
यश्चौर्यं ह्वदये चुचोरथिषते कृष्णस्य गुप्तं धनं।
नित्यानित्य विचार चारु ह्वदयस्योपास कस्यापि में,
तन्नूतं हरते विवके शरणं चेतः सुवर्णं सदा।।

2. सारस्वतम् –

यह गीतिकाव्य सरस्वती की स्तुति में लिखा गया भक्ति साहित्य है। भाव व शिल्प की दृष्टि से श्रेष्ठ है। कथ्य गागर में सागर भरने जैसा है।

3. श्रीगोवर्धनगौरवम् – इस खण्ड काव्य में गोवर्धनधारी भगवान श्री गिरिराज जी का वर्णन है। इसका वर्ण्य विषय आँखों के सामने चित्र स्थापित करने वाला है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को उद्धृत किया गया है।

श्रीनिवासरथ –

आधुनिक संस्कृत साहित्य के युग्बोधक कवियों में ख्यातलब्ध कवि ''श्री निवासरथ'' का जन्म 1933 में पुरी (उड़ीसा) में हुआ। उनका बाल्यकाल मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों में तथा युवाकाल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उच्च अध्ययन में व्यतीत हुआ। पारम्परिक पद्धति से संस्कृत विषयक अध्ययन पिता से प्राप्त कर विक्रम विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बने। यहीं से साहित्य साधना प्रारम्भ हुयी जो आज आधुनिक कवियों की श्रृंखला में अपना विशिष्ट पहचान रखती है। मूलतः भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के नवविधाओं में संस्कृत रचना की परम्परा से प्रभावित है। इनकी प्रथम रचना ''बलदेवचरितम्'' तथा द्वितीय रचना ''तदेव गगनं सैव धरा'' नामक गीतिकाव्य है। जिसका प्रकाशन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान से हुआ है।

''तदेव गगन सैव धरा'' – यह गीतिकाव्य 41 मुक्तक गीतिकाव्यों का संग्रह है इस गीतिकाव्य में कवि ने आज के समाज में सदाचार विमुख नेताओं की स्वार्थलिप्सा, भौतिक भोगातिशयित जीवन शैली, जीवन विपर्यास एवं युवकों के मनों में व्याप्त निराशावादिता को नवीन शैली में स्वाभाविक अभिव्यक्ति दी है। समय की पुकार को ही उन्होंने रचनाओं की वर्ण्य सामग्री बनायी है। नवजीवन में संस्कार का महत्व क्या है ? कवि की पक्तियाँ दर्शनीय है।

अहमपि जाने, जनीषे त्वम्/नवजीवन–संस्कार महत्वम्।

स्वार्थ दर्शन लोक चरित्रम्/कुरुते शनैः शनैरपवित्रम्।

अनियन्त्रित प्रभावा हरते/पशुता मानव जीवन–सत्वम्।।

समीक्ष्य कवि दवे की कृति ''कालकौतुकम्'' नामक खण्डकाव्य में श्री निवास रथ की भावना को इस प्रकार प्रकट किया है –

शिक्षा संस्कृति जीवनोत्सव विद्यौ खाद्येऽभिवादे यथा।

भाषा–भूषण–भाषणे–भृति पदे संकल्पिते शासने।।[3]

समाजिक, धार्मिक राजनैतिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक युग् बोधक भावों की तुल्यता दोनों कवियों की कृतियों में समाविष्ट है। कवि दवे ने ''कवितामंजरी'' नामक गीति काव्य में 38 मुक्तकगीत का संग्रह किया है। जो समसामयिक युगबोधक भावों को स्वर देता है। साथ ही नेताओं की स्वार्थलिप्तता, भौतिकभोग तथा निराशावादिता को अपने खण्डकाव्यों में दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया है।

कवि रामकरण शर्मा –

शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में शीर्षस्थ पदों को अलंकृत करने वाले विद्वान कवि पं. रामकरण शर्मा का जन्म मिथिला धरा पर 1928 में हुआ। बाल्यकाल से ही उनकी मेघा काव्य–सृजन के ऊहा–पोह में लगी रही। उनकी प्रथम रचना 1943 में तुलसीस्तवः नाम से प्रकाशित हुयी, जो कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। उनका 'पाथेयशतकम्' गगनवाणी, वीणा, सर्वमंगला नामक काव्य मूल्यबोध और सांस्कृतिक चेतना के लिये प्रसिद्ध है। जिसमें मानव की गरिमा, सांस्कृतिक प्रदूषण और नैतिक मूल्यों की चिन्ता की गयी है। सनातन परम्परा के प्रति अगाध आस्था का भाव भी इनके काव्य में व्याप्त है।

समीक्ष्य कवि पं. दवे के काव्यों में भी कुछ इसी तरह की विशिष्टता देखने को मिलती है। सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सचेष्ट कवि ने परम्परागत मूल्यों को पुनः स्थापित करनेका सार्थक प्रयास किया है।

आज के युग् में बढ़ते हुये कामना के प्रसार को लेकर कवि का चिन्तन स्पष्ट है –

युगानुरुपंनहि योऽधुनाज्ञः पुराणपंगु कुरुते प्रयासम्।

नासौ स्वकामना मनसि प्रकल्पितान लब्ध्वा क्वचित विदन्ति सौख्यम्।।[4]

इसी भाव को कवि श्री राम करण शर्मा ने इस प्रकार कहा है –

'अपि कामनाऽपराध्यन्ति जनयन्ति विविदिषा पिपासाश्च'।[5]

वस्तुतः आज के कलह के पीछे कामना का ही अपराध होता है। वही वाद–विवाद और पिपासाऐं पैदा कर रही है। प्रकल्पित कामना ने किसी को सौख्य नहीं दिया । अतः प्रणय की नीति से उसका संस्कार किया जाना चाहिये।

दोनों ही कवि सनातन चेतना के कवि है। उदात्त शैली और सहज अभिव्यक्ति ही इनके काव्य की चारुता है। कवि श्रीशर्मा के काव्य 'गगनवाणी' में अन्याय के प्रतीकार के लिये सतत् तैयार रहना चाहिये का

आव्हान किया गया है, तथा कृपाण के स्थान पर हाथ में वीणा, पुस्तक, लेखनी धारण करने की कामना की गयी है।

''देवि ने धेहि कृपाणं वीणैव ते करे भातु''[6]

कवि उमाशंकर शर्मा त्रिपाठी –

राम, कृष्ण और तुलसी के प्रदेश उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले में उत्पन्न उमा शंकर त्रिपाठी (1922–1982) पारम्परिक एवं आधुनिक शिक्षा के विज्ञ विद्वान थे। वे काशी विद्यापीठ में अंग्रेजी के प्राध्यापक पद पर कार्य करते हुये, संस्कृत महाकाव्य तथा खण्डकाव्यों की रचना की। अंग्रेजी साहित्य से परिचित होने के कारण उनके महाकाव्य में नवीन विचारों का समावेश हुआ तथा उन्होंने आज की संवेदना को स्वर दिया है। कवि की रचनाओं में 'छत्रपतिचरित्रम्' महाकाव्य अति प्रसिद्ध है तथा खण्ड काव्यों में 'उमरखय्याम भारती' नामक अनुदित काव्य है। जिसमें खय्याम के रुवाईयों का मन्दाक्रान्ता छन्द इनका अनुवादित काव्य ग्रन्थ भी प्राप्त होता है। कबीर की साखियों का अनुष्टुप छन्द में अनुवादित काव्य ग्रन्थ प्राप्त होता है। इनका चक्रिचूडामणि खण्डकाव्य विनोदात्मक काव्य है, जो समय के विषय में गम्भीर संकेतों को देता है।

परमानन्द शास्त्री –

उत्तर प्रदेश के बुलन्द शहर के अनवरपुर में जन्मे, मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के प्राध्यापक रहे परमानन्द शास्त्री जी ने तीन संस्कृत महाकाव्य तथा चार खण्डकाव्य रचे।

खण्डकाव्यों में 1. वानरसन्देश 2. गन्धदूतम् 3. कौन्तेयम् 4. भारतशतकम् है। इसके अतिरिक्त इन्होंने शोकगीति, गीतिसंग्रह, सूक्तिशतकम् तथा गजल–गीतियों की भी रचना की है। इनका वानरसंदेश राजनैतिक विडम्बना पर आधारित काव्य है, जिसमें नेता के हास्यास्पद चरित्रों का चित्रण किया गया है। नेताओं का सत्ता स्नेह से राजनीति का अधोपतन तथा कुर्सी, राशन आदि धरातलीय चिन्तन को चित्रित किया गया है।

स्मारं स्मारं चिरमतितरां भुक्तसत्ता सुखानां,

तस्य श्रीषु प्रणयि हृदयं वेधयन्ति व्ययाऽऽसीत्।

धर्मस्फोटे दिनकर कर स्पर्श दोषेण तुल्या,

तिग्मा किं वा नख इव शिका दीर्ध शूकस्य विष्ठा।।[7]

तुल्य कवि पं.दवे ने भी अपने खण्डकाव्यों में वर्तमान राजनीति, कुर्सी की आशक्ति, वरांगना समान उसकी मति का विभावन, भुक्त सत्तासुख का राग आदि को युगीन स्वरों में व्यक्त किया है –

नायं कुरसिकारागः प्राण कष्टेऽपि मुंचित,

मानापमानं भृत्यं वा नेक्षतेऽस्याः वशंवदः।[8]

लब्ध्वा कुरसिकासंग प्रमुग्धाः यतिनोऽप्यहो,

न त्यक्तुं चेष्टते कश्चित् आश्लिष्येमां सकृज्जनः।।[9]

शास्त्री जी ने आज के चिन्तन को आत्मसात् करते हुये, भाषा को अति सहज बनाकर, इतर भाषा के भावों को भी अपनी लेखनी में लपेटे हुये, कर्ण के चरित्र पर आधारित कौन्तेय नामक खण्डकाव्य लिखा है। जिसमें वर्तमान की अभिव्यक्ति होता है। भारतीय नारी की विवशता, शोषण तथा वंचितों की व्यथा प्रकट हो रही है।

कवयित्री क्षमाराव –

पुरुष कवि की भाँति ही आधुनिक महिला कवयित्रियों ने भी अपने खण्डकाव्यों के माध्यम से समय के स्वर को पुष्ट किया है। भक्ति को भाव दिया है तथा संघर्ष को धार दिया है। जिसमें पण्डिता क्षमाराव का नाम अग्रगण्य है। पण्डिता क्षमाराव की संस्कृत साहित्य साधना ने आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा को महती समृद्धि दी है। जीवन की समस्याओं को मानो साक्षात् शब्द दिया हो। कवयित्री का जीवन भी संघर्षमय ही रहा। किन्तु उन्होंने संघर्ष को हर्ष में बदलते हुये अपनी लेखनी के प्रवाह को अवरुद्ध नहीं होने दिया और साहित्य साधना की अविराम सफलता को अभिराम तक ले गयी।

इनके पिता शंकर पाण्डुरंग अपने युग् के उत्तम कोटि के विद्वान थे। तीन वर्ष की अल्पायु में ही वह पिता की छत्र–छाया से वंचित हो गयी थी। इनका बाल्यकाल अति अभाव में व्यतीत हुआ, तथा गार्हस्थ जीवन का सुख भी चिरकालिक नहीं रहा। अत्यधिक असहिष्णु वातारण में जैसे–तैसे पितृव्य के समक्ष उन्हीं के घर में अनौपचारिक पढ़ाई पूर्ण की। अपने समय के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित हुयी और गाँधी जी की अनुमति से स्वतन्त्रता संग्राम का अंश बन गयी। कवयित्री को गन्दी बस्ती के प्रौढ़ लोगों को साक्षर करने का कार्य दिया गया, जिसे उन्होंने पूर्ण इमानदारी से निभाया। अपने उक्त अनुभवों को काव्य में पिरोया। नारी हृदय की संवेदना से गुंजित नवयुग का नया काव्य रचा। पति के साथ कवयित्री ने यूरोप का भ्रमण भी किया था। अतैव आधुनिक जीवन और आधुनिक विधाओं से भी उनका साक्षात्कार हुआ जो उनके

रचना संसार में दिखाई देता है। उन्होंने ''सत्याग्रहगीता'', ''उत्तरजयसत्याग्रहगीता'' जैसे राष्ट्रभक्ति काव्य की रचना की तथा आस्था समर्पण एवं सामाजिक विसंगतियों के प्रति विरोध को अभिव्यक्ति देने वाला खण्डकाव्य ''मीरालहरी'' की रचना भी की।

मीरालहरीकाव्य – मीरा का चरित्र तथा उसकी साधना गाथा का काव्य है। इस काव्य में मीरा का समर्पण तथा उसके अंतरंग संसार का चित्रण किया गया है। यह काव्य 135 शार्दूलविक्रीडित छन्दों में निबद्ध है। मीरा का तन्मयी भाव को दर्शाने वाले इस छन्द में लहरी काव्य का सौष्ठव दृष्टव्य है।

दीनानां पाहि विभो त्वमेव शरणं नान्यः शरण्योऽस्ति में,

प्रार्थ्यैवं विनता प्रजातपुलका प्रोद्वीक्ष्य मूर्ते मुखम्।

ईषत्स्मेरमिव स्थितं परवशा वाष्पाय मानेक्षणा,

ब्रह्मानन्द महार्णये क्षणमहो मग्नेवराराजते।।[10]

पं. श्री राम दवे

श्री दवे का खण्डकाव्य शाश्वत है और वह आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा का सारथी भी है। निःसन्देह पण्डित जी आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा के पारंगत और सर्वमान्य कवि है। खण्डकाव्यों की श्रृंखला लम्बी है, अनूदित काव्यों ने इसे और विस्तार दे दिया है। जिसमें प्राक्तन संस्कार, और अधुनातन व्यवहारों, का युगीन स्पन्दनात्मक चिन्तन शब्दों में ढ़ाला गया है। इस भक्त कवि के भक्ति काव्य के रुप में ललिता लहरी, अपाङ्गलीला, भारतीविलास तीनों गंगा–यमुना सरस्वती सी पावनता की वाहिनी है। जो इष्ट सिद्धि से अभीष्ट प्राप्ति पर बल देती है। सांस्कृतिक वैभव को बचाये रखने की संस्तुति करती है तथा मनुष्य के दैनिक व्यवहार का दृष्टान्त बनकर पथ प्रदर्शन करती है।

हे मां! तुम ही युगकर्त्री हो, सज्जन दुर्जन में बुद्धिगत भेद उत्पन्न करती हो, अतः अपनी करुणालहरी से विषमता के विकारों को दूर करो –

युगानां कर्त्री त्वं दिशसि मनुजानामपि मतिम्।

सतां वा दुष्टानामपि च धिषणा भेद जननी ....।।[11]

सामयिक दर्शन, व्यंग्यवेदना और अन्योक्ति का साम्राज्य है। नवीन सुक्तियों तथा आधुनिक शब्दों का विनियोग है। जो कवि को आधुनिक खण्ड काव्य परम्परा के कवियों में अनामिकावत् सिद्ध करता है। वहीं काल की विडम्बना का रेखाचित्र कवि का ''कालकौतुकम्'' खण्डकाव्य है, जिसमें श्लेषालंकार के माध्यम से मानव के आधुनिक कार्य प्रणालियों का तथा उनके चित्त एवं चरित्र का व्यंग्यात्मक वर्णन किया गया है।

संस्कृति और सभ्यता का उदय–अस्त कवि की दृष्टि में काल का कमाल है। नवोन्मेष उसकी नियति है। परिवर्तन उसकी प्रकृति है। एतदर्थ युग्–बदला, युग्–पुरुष बदले युग्–धर्म भी बदल गया। राजतंत्र प्रजातन्त्र हो गया, प्रजातन्त्र स्वेच्छातंत्र हो गया, आस्था स्थल अब क्लब हो गये। वेलेन्टाईन–डे राष्ट्रीय पर्व सा उत्साह पूर्व हो गया –

चित्रं काल कलावकीर्णकलितैः कान्ताभिलाषोत्सुकाः,

कालेऽप्राप्य धवं शिवाश्रय बलं बालाः हताः यौतुकेः।

त्यक्त्वा सत्कुल सम्पदं नवदृशो लज्जां च भूषां स्त्रियाम्,

वेलेन्टाइन्स विभावितं प्रणमिदं सम्भावयन्त्युत्सवम्।।[12]

''कामधेनुशतकम्'' काव्य प्राचीन काव्य परम्परा का भी प्रतीक है और आधुनिक विषय वस्तु का सटीक चित्रण कर साम्प्रतिकी भावाबोध को मूर्त रुप देने वाला शतक काव्य भी है। इसमें गीता, गोविन्द, गंगा सी पवित्र गो की महिमा की प्रशस्ति है। आनन्दवन, पथमेड़ा में स्थित गोवर्धन गोशाला की गरिमा, तथा उस पावन स्थली की ऐतिहासिक, धार्मिक महत्ता को छन्दोबद्ध किया गया है। आधुनिक युग में गोमाता की दयनीय दशा उसके क्रन्दन व चीत्कार का बड़ा ही कारुणिक वर्णन है। इसमें देवताओं से प्रार्थना की गयी है कि देव भूमि भारत में गोवध का अभिशाप कब समाप्त होगा ? भारतवासियों का शोर्य कब जागेगा ? आदि आदि। गो की व्यथा का यथार्थ चित्रण करने वाले इस काव्य में विविध छन्दों का प्रयोग हुआ है। काव्य की भाषा प्रांजल और व्याकरण सम्मत है। भाव उत्कृष्ट है। भक्ति की सरिता प्रवाहित है। करुणा की मार्मिकता कवि के आधुनिक कवित्व की कसौटी है। निःसन्देह यह काव्य अधुनातन शतक साहित्य की अद्भुत कड़ी है।

''परिखायुद्धम्'' काव्य समसामयिक घटित घटनाओं का रेखाचित्र है। वह खाड़ी युद्ध की विभीषिका की युग्बोधिका है। इस काव्य में अनन्त काल से संसार में प्रलय और उदय की प्रवृत्तियों का चिन्तन है। तैल सम्पदा पर एकाधिकार स्थापित करने की हठी मानसिकता वाले देशों के मध्य आग्नेय युद्ध का प्रचण्ड ताण्डव तथा जनता जनार्दनों के जलते हुये आरमानों को शब्द दिया गया है।

पं.श्री राम दवे द्वारा रचित अनूदित काव्य का नाम चिन्तन इस प्रकार है –

1. ''ब्रह्मरसायनम्'' (खण्डकाव्य) मूल – शाह जो रसालों, सूफी सन्त अब्दुल लतीफ की कृति का संस्कृत पद्यानुवाद।
2. ''यवनीनवनीतम्'' (खण्डकाव्य) मूल – मिर्जा गालिब के ''गालिब'' के गजलों का संस्कृत पद्यानुवाद है।
3. ''अकिंचन चैत्यम्'' (खण्डकाव्य) मूल – टॉमस ग्रे कृत – ''एलिजी रिटिन इन ए कंट्री चर्चयार्ड'' का संस्कृत पद्यानुवाद।
4. गीतांजलि – मूल – रविन्द्र नाथ टेगोर कृत का संस्कृतानुवाद
5. निर्मला – मूल – मुन्शी प्रेम चन्द्र के उपन्यास का अनुवाद
6. घ्रुवस्वामिनी – मूल – जयशंकर प्रसाद कृत नाटिका का संस्कृतानुवाद ।

निष्कर्ष –

वस्तुतः प्रत्येक काल में काव्य रचना की एक विशिष्ट शैली रही है। उनके मन्तव्य भी एक जैसे ही रहें है। उनके चिन्तन और चेतना का मनोविज्ञान भी एक जैसा ही रहा है, किन्तु कतिपय परिवर्तन और परिवर्धन के साथ। स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् के कवियों की लेखनी ने युगानुरुप परिवर्तन की व्यवस्था को तथा साम्यवादी चिन्तन को काव्य का आकार दिया। राजतन्त्र और सामन्ती व्यवस्थाओं के विरोधियों के विरोध को सम्बल दिया गया। राष्ट्रभक्तों का स्तवन तथा सत्ता भक्तों के दुश्चरित्रों का चित्रण बिना लाग लपेट के किया गया। प्रकृति की विकृति, पाश्चात्य शिक्षा नीति के कारण भारतीयों में भारतीय संस्कारों के ह्रास पर चिन्ता जतायी गयी। वर्ग संघर्ष, राष्ट्रीय आंदोलन, रोटी, कपड़ा और मकान जैसी प्राथमिक आवश्यकताऐं खण्डकाव्य का विषय बन गया। इस प्रकार आधुनिक विषय परक एक–एक घटना विशेष को अपने काव्यों में घटित करने वाले कवि गण आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा के कवि कहलाये।

सन्दर्भ –

1. जयपुर की संस्कृत साहित्य को देन – पृ.सं. 82
2. वहीं – पृ.सं.– 82
3. कालकौतुकम् – कालायतस्मैनमः – श्लोक सं.– 18
4. कैलिभूकैतवम् –श्लोक सं. – 1/14
5. वाणी – पृ.सं.– 6
6. गगनवाणी – पृ.सं. – 5
7. वानर सन्देश – श्लोक सं. – 30
8. कालकौतुकम् – बलवान कुरसिका मोहः – श्लोक सं. – 3
9. वही – श्लोक सं. – 6
10. मीरालहरी काव्य – पूर्वखण्ड – श्लोक सं. – 19
11. ललितालहरी – श्लोक सं. – 39
12. कालकौतुकम् – कालायतस्मैनमः – श्लोक सं. – 17